पुना International School

Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

MONTH- JUNE

CLASS- 8

SUB- SANSKRIT

द्वितीयःपाठः

बिलस्य वाणी न कदापि मे श्रता
(बिल की बोली कभी भी मैंनें नही सुनी)

तृतीयः पाठः

डिजीभारतम
(डिजिटल भारत)

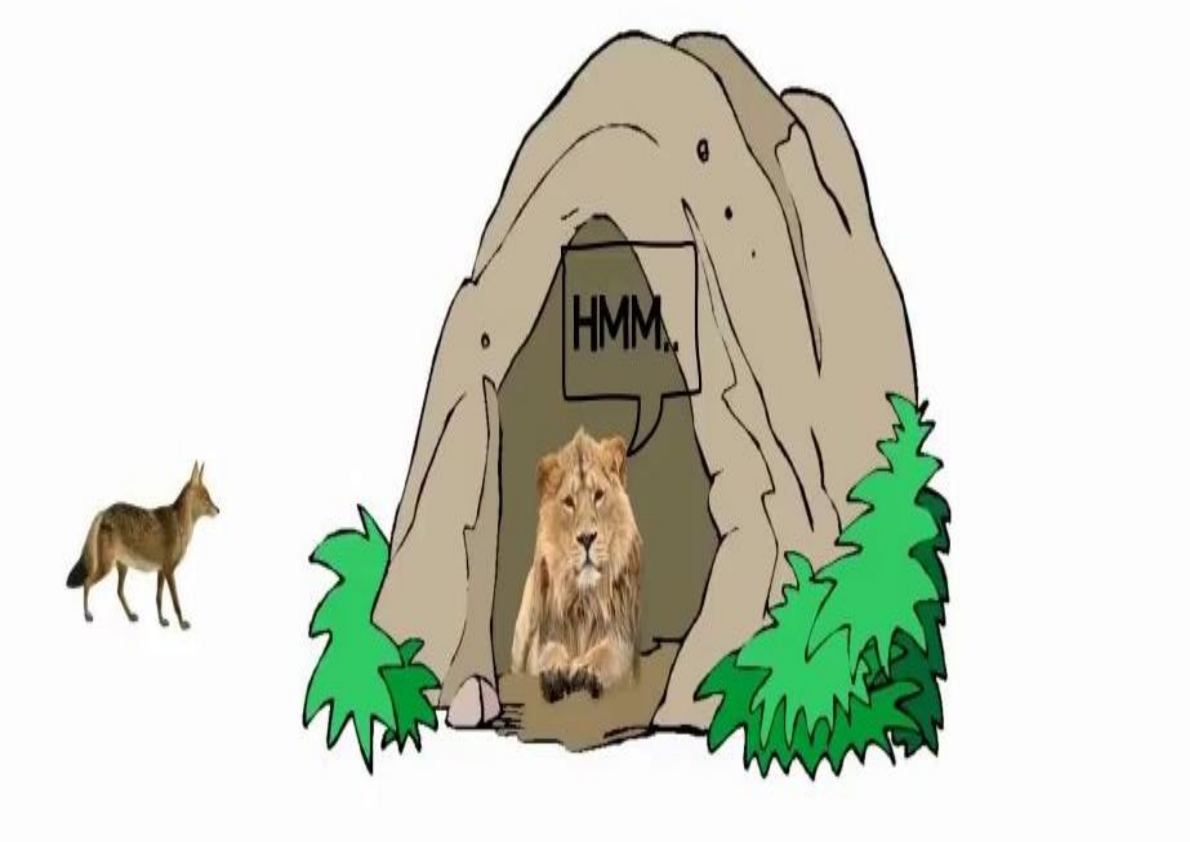

अध्ययन पध्धति

- पाठ वांचन
- पाठ समजूति
- शब्दार्थः
- प्रश्नोतरी
- अभ्यासकार्य
- व्याकरण
- साहित्य
- प्रवृति

पाठःद्वितीय

बिलस्य वाणी न कदापि मे श्रुता

(बिल की बोली कभी भी मैंनें नहीं सुनी)

द्वितीयः पाठः

बिलस्य वाणी न कदापि मे श्रुता

[प्रस्तुत पाठ संस्कृत के प्रसिद्ध कथाग्रन्थ 'पञ्चतन्त्रम्' के तृतीय तन्त्र 'काकोलूक... से संकलित है। पञ्चतन्त्र के मूल लेखक विष्णुशर्मा हैं। इसमें पाँच खण्ड हैं ... 'तन्त्र' कहा गया है। इनमें गद्य-पद्य रूप में कथाएँ दी गयी हैं जिनके पात्र मु... पशु-पक्षी हैं।]

अव्ययप्र...

कस्मिंश्चित् वने खरनखरः नाम सिंहः प्रतिवसति स्म। सः कदाचित् इतस्ततः परि... क्षुधार्तः न किञ्चिदपि आहारं प्राप्तवान्। ततः सूर्यास्तसमये एकां महतीं गुहां दृष्ट्वा सः अचिन्तयत्-"नूनम् एतस्यां गुहायां रात्रौ कोऽपि जीवः आगच्छति। अतः अत्रैव निगूढो भूत्वा तिष्ठामि" इति।

एतस्मिन् अन्तरे गुहायाः स्वामी दधिपुच्छः नाम शृगालः समागच्छत्। स च यावत् पश्यति तावत् सिंहपदपद्धतिः गुहायां प्रविष्टा दृश्यते, न च बहिरागता। शृगालः अचिन्तयत्-"अहो विनष्टोऽस्मि। नूनम् अस्मिन् बिले सिंहः अस्तीति तर्कयामि। तत् किं करवाणि?" एवं विचिन्त्य

...रस्थः एवं कर्तुमारब्धः-"भो बिल! भो बिल! किं न ...मरसि, यन्मया त्वया सह समयः कृतोऽस्ति यत् यदाह...ह्यतः प्रत्यागमिष्यामि तदा त्वं माम् आकारयिष्यसि? ...दि त्वं मां न आह्वयसि तर्हि अहं द्वितीयं बिलं यास्यामि ...ति।"

अथ एतच्छ्रुत्वा सिंहः अचिन्तयत्-"नूनमेषा गुहा ...वामिनः सदा समाह्वानं करोति। परन्तु मद्भयात् न ...किञ्चित् वदति।"

अथवा साध्विदम् उच्यते-

भयसन्त्रस्तमनसां हस्तपादादिकाः क्रियाः।
प्रवर्तन्ते न वाणी च वेपथुश्चाधिको भवेत्॥

तदहम् अस्य आह्वानं करोमि। एवं सः बिले प्रविश्य मे भोज्यं भविष्यति। इत्थं विचार्य सिंहः सहसा शृगालस्य आह्वानमकरोत्। सिंहस्य उच्चगर्जन-प्रतिध्वनिना सा गुहा उच्चैः शृगालम् आह्वयत्। अनेन अन्येऽपि पशवः भयभीताः अभवन्। शृगालोऽपि ततः दूरं पलायमानः इममपठत्-

अनागतं यः कुरुते स शोभते
स शोच्यते यो न करोत्यनागतम्।
वनेऽत्र संस्थस्य समागता जरा
बिलस्य वाणी न कदापि मे श्रुता॥

बिलस्य वाणी न कदापि मे श्रुता

पाठ का परिचय

- प्रस्तुत पाठ संस्कृत के प्रसिद्ध कथाग्रन्थ पञ्चतन्त्रम् के तृतीय तन्त्र काकोलूकीयम से संकलित है।
- पञ्चतन्त्र के मूल लेखक विष्णशर्मा है।
- इसमे पाँच खण्ड है जिन्हे तन्त्र कहा गया है। इनमे गद्य-पद्य रुप में कथाए दी गई है जिनके पात्र मुख्यतः पशु-पक्षी है।
- जो आने वाले कल का उपाय करता है, वह संसार में शोभा पाता है और जो आने वाले कल का उपाय नही करता है वह दुःखी होता है। यह शीख दी गई है।

शब्दार्थः

- वने - जंगल में
- आहारम - भोजनको
- निगूढो भूत्वा - छिपकर
- तिष्ठामि - ठहरता हू
- गुहाया - गुफा का
- शृगालः - गीदड
- रवम - आवाज
- तर्हि - तो
- यावत-तावत - जब-तक
- ननम - निश्चय से
- सिंहपदपद्धति - शेर के पैरो के चिहन
- मदभयात - मेरे डर से
- भयसन्त्रस्तमनसां - डरे हुए मन वालोंका
- हस्तपादादिकाः - हाथ-पैर आदि से स
- वेपथ - कम्पन
- सहसा - एकाएक
- ततः - वहा से

साहित्य

एकपदेन उत्तरत-

क- सिंहस्य नाम किम?

उत्तर- खरनखरः

ख- गुहायाः सवामी कः आसीत?

उत्तर- दधिपुच्छ

ग- सिंह कस्मिन समये गुहाया समीपे आगतः?

उत्तर- सूर्यास्तसमये

घ- हस्तपादादिकाः कियाः केषां न प्रवर्तन्ते?

उत्तर- भयसंत्रस्तमनसाम

ङ- गुहा केन प्रतिध्वनिता?

उत्तर- उच्चगर्जनेन

घ- खरनखरः कुत्र प्रतिवसति स्म?

उत्तर- कस्मिंश्चित

❖ **रेखांकितपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-**

(क) क्षुधार्तः सिंहः कुत्रापि आहारं न प्राप्तवान्?
उत्तर- कीदृशः सिंहः कुत्रापि आहारं न प्राप्तवान्?

(ख) दधिपुच्छः नाम शृगालः गुहायाः स्वामी आसीत्?
उत्तर- किं नाम शृगालः गुहायाः स्वामी आसीत्?

(ग) एषा गुहा स्वामिनः सदा आह्वानं करोति?
उत्तर- एषा गुहा कस्य सदा आह्वानं करोति?

(घ) भयसन्त्रस्तमनसां हस्तपादादिकाः क्रियाः न प्रवर्तन्ते?
उत्तर- भयसन्त्रस्तमनसां कीदृशाः क्रियाः न प्रवर्तन्ते?

(ङ) आह्वानेन शृगालः बिले प्रविश्य सिंहस्य भोज्यं भविष्यति?
उत्तर- आह्वानेन शृगालः कुत्र प्रविश्य सिंहस्य भोज्यं भविष्यति?

अध्ययन प्रवृति

- साप्ताहिक मूल्यांकन
- शेर ओर गीदड कि कहानी लिखो।

अध्ययन मूल्यांकन

- शेर ओर गीदद की कहानी जाने ओर अच्छ मित्र कि बात माननी चाहिए वो शीखे।
- संस्कत शब्दो के नाम उच्चारण करना शीखे।

पाठःतृतीय

डिजीभारतम

(डिजिटल भारत)

पाठ का परिचय

- प्रस्तत पाठ डिजिटल इण्डिया के मूल भाव को लेकर लिखा गया निबन्धात्मक पाठ है।
- इसमे वैज्ञानिक प्रगति के उन आयामो को छआ गया है, जिनमे हम एक क्लिक द्वारा बहुत कुछ कर सकते है।
- आज इन्टरनेट ने हमारे जीवन को कितना सरल बना दिया है।
- हम भौगोलिक दृष्टि से एक दूसरे के अत्यन्त निकट आ गए है।
- इसके द्वारा जीवन के प्रत्येक कियाकलाप सुविधाजनक हो गए है।
- एसे ही भावो को यहा सरल सस्कत मे व्यक्त किया गया है।
- आज सारे काम कम्प्यूटर नामक यन्त्र से सिद्ध होते है।
- अब बाज़ार मे वस्तुओ को खरीदने के लिए रुपयो की अनिवार्यता नही ।
- वह दिन बहत दर नही है जब हम हाथ मे केवल एक मोबाइल फोन लेकर सारे काम करने मे समथ होंगे।

शब्दार्थः

- कालपरिवर्तन- – समय के बदलने
- कर्गदोपरि – कागज के ऊपर
- टकणयन्त्रस्य – टाइप की मशीन
- कम्प्यूटरमाध्यमेन – कम्प्यूटर के माध्यम
- संगणकयन्त्रण – कम्प्यूटर से
- आपणे – बाजार
- मुद्राहीनाय – रुपयो से रहित
- कार्डमाध्यमेन – कार्ड के द्वारा
- पत्राणि – टिकट
- सर्वत्र – सब जगह
- कक्षम – कमरे को
- प्रदातुम – देने के लिए
- लेखनाथंम – लिखने के लिए
- दिशि – दिशा में
- आदान-प्रदानम – लेना-देना

साहित्य

एकपदेन उत्तरत-

क- कुत्र डिजिटल इण्डिया इत्यस्य चर्चा भवति?

उत्तर- संपूर्णविश्वे

ख- केन सह मानवस्य आवश्यकता परिवर्तते?

उत्तर- कालपरिवर्तनेन

ग- आपणे वस्तूना क्रयसमये केषाम अनिवार्यता न भविष्यति?

उत्तर- रूप्यकाणाम

घ- कस्मिन उद्योगे वृक्षाः उपयूज्यन्ते?

उत्तर- कर्गदोद्योगे

ङ- अद्य सर्वाणि कार्याणि केन साधितानि भवन्ति?

उत्तर- चलदूरभाषयन्त्रण

घ- वयंम कस्या दिशि अग्रशरामः?

उत्तर- डिजीखारतम

❖ अधोलिखितपदयोः सन्धिं कृत्वा लिखत-

I- पदस्य	+	अस्य
2- तालपत्र	+	उपरि
3- च	+	अतिष्ठत
4- कर्गद	+	उद्योगे
5- क्रय	+	अर्थम्
6- इति	+	अनयोः
7- उपचार	+	अर्थम्

उत्तर–1-पदस्यास्य, 2-तालपत्रोपरि, 3-चातिष्ठत, 4-कर्गदोद्योगे, 5-क्रयार्थम्, 6-इत्यनयोः, 7-उपचारार्थम्

अध्ययन प्रवृति

- साप्ताहिक मूल्यांकन
- कम्प्यूटर के उपयोग के बारें में पाँच लिखते।

अध्ययन मूल्यांकन

- शब्दो के नाम संस्कत में जाने।
- अपना काम स्वय करना शीखे।
- कार्ड का उपयोग करना शीखे।

Thank
you